वक्रोक्ति संप्रदाय

–प्रा. मिथिलेश अवस्थी

- यह सिद्धांत काव्य शास्त्र का प्रौढ़ चिंतन है। इस सिद्धांत के प्रणेता आचार्य कुंतक ने 'वक्रोक्ति–जीवतम्' में चर्चा की है।

- वक्रोक्ति काव्य की आत्मा है। अलंकार से पृथक यह एक काव्य तत्त्व है।

- शब्द और अर्थ के माध्यम से कवि का संपूर्ण व्यापार अपनी वक्रता के कारण ही वैशिष्टय का केंद्र बनता है। इन्होंने वर्ण, चमत्कार, शब्द, सौंदर्य, वस्तु की रमणीयता, प्रबंध कल्पना, अप्रस्तुत योजना आदि के संयोजन को वक्रोक्ति के अंतर्गत स्थान दिया है। उनके अनुसार वक्रोक्ति चतुर कवि कर्म का कुशलता से निर्वहन है।

भामहः– वक्रोक्ति को व्यापक अर्थ में ग्रहण करते हुए इसे अतिशयोक्ति का पर्याय मानते हैं। उनके अनुसार इसके बिना रचना यथार्थ काव्य न होकर कथनों का समूह मात्र बन कर रह जाती है।

दंडीः– समस्त वांड्मय को दो भागों में बाँटा जा सकता है। एक स्वाभावोक्ति और दूसरा वक्रोक्ति। उन्होंने स्वाभावोक्ति को छोड़कर उपमा, श्लेष आदि सभी अलंकारों को वक्रोक्ति का पर्याय माना है।

वामनः– वक्रोक्ति एक अर्थालंकार है। (यह धारणा स्वीकृत नहीं हुई।)

रुद्रटः– वक्रोक्ति एक शब्दालंकार है।

आनंदवर्धनः– वक्रोक्ति एक अर्थालंकार है।

आचार्य भोजराजः– वक्र वचन ही काव्य है। उन्होंने समस्त वांड्मय को तीन भागों में बाँटाः–

(क) वक्रोक्ति, (ख) स्वाभावोक्ति, (ग) रसोक्ति।

कुंतक के अनुसार वक्रोक्ति के छः भेद हैंः–

१. **वर्ण विन्यास वक्रताः–** इसके दो भेद हैं :– १. एक वर्ण की आवृत्ति, २. दो वर्णों की आवृत्ति।

२. **पद पूर्वार्ध वक्रताः–** इसके आठ भेद हैं :– १. रूढ़ि वैचित्र्य, २. पर्याय वक्रता, ३. उपचार वक्रता, ४. विशेषण वक्रता, ५. संवृत्ति वक्रता, ६. वृत्ति वक्रता, ७. लिंग वैचित्र्य वक्रता, ८. क्रिया वैचित्र्य वक्रता।

३. **पद परार्ध वक्रता:–** प्रत्यय जन्य वक्रता (वचन, कारक, काल)। इसके छः भेद हैं:– १. काल वक्रता, २. कारक वक्रता, ३. संख्या वक्रता (वचन वक्रता), ४. पुरुष वक्रता (उत्तम–प्रथम), ५. प्रत्यय वक्रता, ६. उपग्रह वक्रता (परस्मै–आत्मने– केवल संस्कृत में)।

४. **वाक्य वक्रता (वस्तु वक्रता):–** इसके दो भेद हैं:– १. सहज वस्तु वक्रता, २. अर्थालंकारों के प्रयोग से जन्य वक्रता।

५. **प्रकरण वक्रता (प्रबंध का कथा प्रसंग):–** इसके आठ भेद हैं:– १. भावपूर्ण स्थिति की उद्भावना, २. उत्पाद्य लावण्य, ३. प्रमुख तथा प्रासंगिक कथाओं में उपकार्योपकारक भाव, ४. किसी एक प्रकरण का मनोहारी वर्णन, ५. रोचक प्रसंगों का विशेष विस्तार, ६. अप्रधान प्रसंगों से प्रधान कथा की सिद्धि, ७. गर्भांक, ८. विभिन्न प्रकरणों की परस्पर अन्विति।

६. **प्रबंध वक्रता:–** (नाटक–महाकाव्य) इसके छः भेद हैं:– १. मूल रस परिवर्तन, २. प्रकरण विशेष पर कथा की समाप्ति, ३. कथा मध्य में किसी कार्य द्वारा प्रधान कार्य की सिद्धि, ४. नायक द्वारा अनेक फलों की प्राप्ति, ५. प्रधान कथा के द्योतक नाम से प्रबंध काव्य का नामकरण, ६. एक विषय से संबद्ध विलक्षण प्रबंधत्व।

–०–०–०–